म.प्र. जैव प्रौद्योगिकी परिषद का त्रैमासिक न्यूज़ लेटर

जैव प्रौद्योगिकी

अंक - 07 मई 2012

संपादकीय

जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व में भारत 12वें स्थान पर तथा एशिया महाद्वीप में चीन के पश्चात् दूसरे स्थान पर है। उदारीकरण के कारण भारतीय कंपनियों तथा बहुराष्ट्रीय निगमों में समझौतों को बढ़ावा मिला है जिससे प्रतिवर्ष जैव प्रौद्योगिकी व्यापार में 40% की दर से प्रगति हो रही है। आज देश में लगभग 350 जैव प्रौद्योगिकी कंपनियां कार्यरत हैं, जिसमें 53% कंपनियां केवल कर्नाटक में हैं। बैंगलोर में ही 135 कंपनियां संचालित हैं जिससे वह इस देश का 'बायोटेक हब' बन गया है। विगत वर्षों में मुम्बई एवं हैदराबाद में भी जैवप्रौद्योगिकी कंपनियों का तेज़ी से विकास हुआ है। गत वर्ष भारत की प्रमुख 10 कंपनियों में से अकेले बायोकॉन ने ही 1180 करोड़ रुपये का राजस्व प्रदान किया है।

बायोफार्मास्युटिकल (रोग निरोधी टीके, निदान एवं बचाव), जैव कृषि विज्ञान (कीट नाशक, जैव उर्वरक, पौधों की पराजीन किस्में), जैव सूचना विज्ञान, जैव उद्योग तथा जैव सेवायें (शोध एवं विकास कार्य, नेदानिक परीक्षण, अनुबंध पर उत्पादकता) जैव प्रौद्योगिकी उद्योग के प्रमुख कार्यक्षेत्र हैं जिनमें लगभग 40% कंपनियां अकेले बायोफार्मा के क्षेत्र में काम करती हैं। इसके उपरांत जैव सेवायें (21%), जैव कृषि (19%), जैव सूचना (14%) तथा जैव उद्योग (5%) का महत्व है।

मध्यप्रदेश में भी जैव प्रौद्योगिकी के विकास की प्रबल संभावनाएँ हैं। प्रदेश में लगभग 17 जैव प्रौद्योगिकी उद्योग हैं जो कि हाईब्रिड बीज, जैव उर्वरक, जैव कीटनाशक, डाइग्नॉस्टिक किट्स इत्यादि के उत्पादन में जुटें हुए हैं। राज्य में 07 परंपरागत विश्वविद्यालय, 01 कृषि, 01 पशुपालन एवं 01 प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हैं जिनमें जैव प्रौद्योगिकी एवं संबंद्ध विषयों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इन्हीं विश्वविद्यालयों एवं इनसे जुड़े हुए महाविद्यालयों में जैव प्रौद्योगिकी में डॉक्टरल एवं डिप्लोमा उपाधि भी प्रदान की जाती हैं, जिनसे प्रशिक्षित मानव संसाधन का विकास हो रहा है। प्रदेश में 13 अनुसंधान संस्थान हैं जहां जैव प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च कोटी का शोध कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

मध्यप्रदेश जैव प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अध्ययनरत छात्रों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है एवं अनुसंधान प्रोत्साहन हेतु भी योजनाएँ पोषित की जा रही हैं। प्रदेश में एक जैव प्रौद्योगिकी पार्क तथा उत्कृष्ट स्तर के एक जीव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना प्रस्तावित है। इससे आने वाले वर्षों में जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शिक्षा, अनुसंधान एवं उद्योग को प्रोत्साहन प्राप्त हो सकेगा।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी
म.प्र. जैव प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल

बायोटेक पार्क -

प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने के लिये जन-निजी भागीदारी (पी.पी.पी.) द्वारा इंदौर में जैव प्रौद्योगिकी पार्क स्थापित करने हेतु म.प्र. जैव प्रौद्योगिकी परिषद को अधिकृत किया गया है। इस हेतु कलेक्टर इंदौर द्वारा दिनांक 23.04.2009 को जैव विविधता एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग को ग्राम चीराखान तहसील देपालपुर की भूमि सर्वे नं 170 रकबा 73.546 हैक्टेयर आवंटित की गई। बायोटेक पार्क के गेट तक बिजली एवं पानी की व्यवस्था हेतु म.प्र. पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लि., इंदौर एवं म.प्र. औद्योगिक केन्द्र विकास निगम, इंदौर से कराये जाने का कार्य प्रचलन में है।

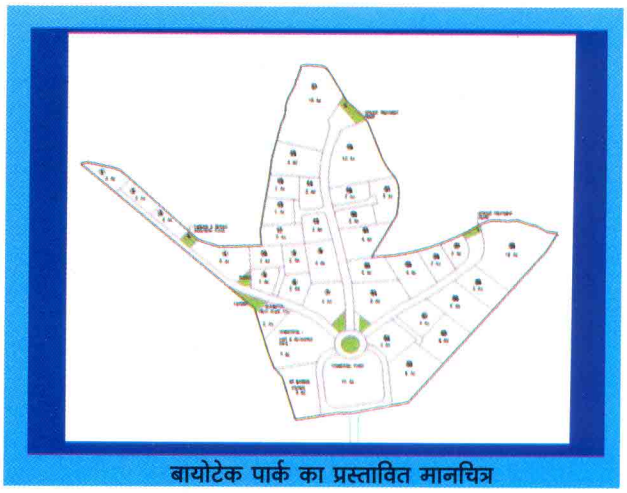

बायोटेक पार्क का प्रस्तावित मानचित्र

संरक्षक
आर. के. स्वाई
प्रमुख सचिव
म.प्र. शासन
जैव विविधता एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भोपाल

संपादक
वी. एन. पाण्डेय
मुख्य कार्यपालन अधिकारी
म.प्र. जैव प्रौद्योगिकी परिषद
भोपाल

सह संपादक
डॉ. अमीता कुशवाह
सलाहकार
म.प्र. जैव प्रौद्योगिकी परिषद,
भोपाल

संपादक मंडल
श्री जे.के. जैन
डॉ. ए. बैनर्जी
डॉ. शानू मिश्रा
कु. जोसलीन टी. जॉर्ज